

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



# जैन जागृति

(Since 1969)

www.jainjagruiti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा  
समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ४९ वे ❖ अंक ८ वा ❖ एप्रिल २०१८ ❖ वीर संवत २५४४ ❖ विक्रम संवत २०७४

या अंकात	पान नं.	पान नं.	
● अहिंसा मूर्ति भगवान महावीर	२३	● सुखी जीवन की चाबियाँ - आठ दोष त्याग	
● ॥ जिनेश्वरी ॥		३ - निन्दनीय प्रवृत्ति त्याग	९१
अध्याय २४ - अष्ट प्रवचन माता	२७	● हास्य जागृति	१०१
● सौ. अलकाबेन गुजर - दीक्षा	३२	● महावीर बनने की तैयारी करें ।	१०३
● कव्हर तपशील	३३	● निवृत्ती के पश्चात जीवन आनंदमय एवं	
● भगवान महावीर और अहिंसा	४३	सुखी बनाने की पुँजी	१०४
● हम महावीर को कितना जानते हैं ?	४५	● प्रसन्न रहना जीवन का वास्तविक उद्देश	१०७
● गुणग्राही हो, दृष्टी अपनी	४७	● सन्मान	१०९
● खत्म करके दुनियादारी के सारे जंजाल		● क्या माँगे प्रभु से ?	१११
महावीर को अपनाकर तुम हो जाओ खुशहाल	५५	● आयुष्या कडे पहाण्याचा दृष्टीकोन	११२
● मैथुन	६७	● एकता में विश्वास रख	११५
● राष्ट्रीय एकात्मतेचे प्रतिक - जैन तत्त्वज्ञान	७२	● सफलता का शॉर्टकट	
● भगवान महावीर का सन्देश	७३	सोच को रखें हिमालय सा ऊँचा	११९
● अक्षय तृतीया उसाचा रस आरोग्य परंपरा	७५	● शिष्य की शोभा : विनय में प्रवृत्ति	१२९
● प्री-वेडिंग शूट के नाम पर		● आत्म विजयाचा महामेरु - भगवान महावीर	१३२
फूहडता का प्रदर्शन	८०	● रत्न संदेश	१३३
● धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा	८१	● प्रासंगिक है, भगवान महावीर के संदेश	१३५

❖ जैन जागृति ❖ एप्रिल २०१८ ❖ १९ ❖

● तपस्वी पंन्यास प्रवर श्री हंसरत्न विजयजी म.सा. ५४ मासक्षमण	१३६	● सुर्यदत्ता ग्रुप, पुणे	१६१
● जीवन का परम मूल्य	१३७	● डॉ. अशोक बोरा, चिंचवड - सन्मान	१६१
● स्पर्श चित्त की बाती का अनन्त ज्योती से	१३९	● गौतमनिधी अब अमेरिका में	१६३
● निसर्ग आणि माणूस	१४१	● जैनीजम् फिलाटेली ग्रुप अधिवेशन	१६४
● डायमंड डायरी	१४३	● छाणी गाँव - दीक्षार्थी गाँव	१६५
● आचार्य अभयदेव सूरिजी म.सा.	१४७	● प्राप्तीकर विवरण पत्र चर्चासत्र, पुणे	१६६
● शब्द सहना भी साधना है।	१४९	● निखिल ग्रोसरी वर्ल्ड, आळंदी	१६७
● काही मनातले काही म्यानातले	१५०	● डॉ. सौ. सुधा कांकरिया, पुरस्कार	१६८
● श्री राजेन्द्रजी सुराणा, पुणे - ६५ वी	१५५	● वाचकांचे मनोगत	१६९
● आनंदऋषिजी हॉस्पिटल, अहमदनगर	१५६	● टँकर : पेट्रोलचा की पाण्याचा	१७३
● संचेती ट्रस्ट, पुणे - पाणपोई	१५८	● सत्य का स्वीकार : जीवन का परिष्कार	१८०
● कुमार डायलिसिस सेंटर, पुणे	१५९	● क्रिम सेंटर, पुणे	१८५
● राज मसाले, पुणे	१६०	● विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकिय बातम्या	

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक रु. २२००

त्रिवार्षिक रु. १३५०

वार्षिक रु. ५०० रु.

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

● www.jainjagruti.in

● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात - रोख/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/ पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

**BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI**

Bank : STATE BANK OF INDIA

Branch : Market Yard, Pune 37.

Current A/c No. : 10521020146

IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य घरले जाईल.

❖ जैन जागृति ❖ एप्रिल २०१८ ❖ २० ❖

## जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३ मो. संजय: ९८२२०८६९९७ सुनंदा: ९४२३५६२९९१, www.jainjagruti.in  
Email : jainjagruti1969@gmail.com • Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

### ◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- ❖ भोसरी, चिंचवड, निगडी - श्री. चांदमलजी लुंकड - फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९
- ❖ पुणे शहर ❖ कुर्डुवाडी - श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३००००८१
- ❖ गुरूवार पेठ, पुणे - श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- ❖ धनकवडी, पुणे - श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५
- ❖ सुखसागर नगर, कात्रज - श्री. प्रफुल्लजी विजयकुमार मुनोत, मो. ९७३००४५७१८
- ❖ महावीर प्रतिष्ठान, पुणे - निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- ❖ सदाशिव पेठ परिसर, पुणे - सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
- ❖ वडगाव शेरी, पुणे - सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- ❖ वडगाव मावळ, पुणे - श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- ❖ खडकी, पुणे - श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- ❖ औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव - श्री. शिरीषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- ❖ दापोडी, पुणे - श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- ❖ नांदेड सिटी, पुणे - श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६
- ❖ दौंड, श्रीगोंदा - श्री. रविंद्र चैनसुखलालजी गुगळे - ९८९०७२३४०२
- ❖ अहमदनगर - श्री. महेश एम. मुनोत - मो. ९४२०६३९२३०
- ❖ जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका - श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी - मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- ❖ सोनई - श्री. मदनलालजी सी. भळगट - फोन : ०२४२७-२३१४६१, मो. ९८८१४१४२१७
- ❖ औरंगाबाद - श्री. सुभाषचंदजी मांडोत-फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- ❖ मुंबई खारघर- श्री. मदनलालजी गांधी-मो. ९८२०५३६७९३
- ❖ नाशिक - श्री. पुंखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन: ०२५३-२३११००८, मो. ९४२३९३९९९०
- ❖ नाशिक - मनोज लखीचंदजी खिंबसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- ❖ बीड - श्री. अतुलकुमार शरदचंद्रजी कोटेचा, मो. ९९६००२४२२४
- ❖ गारगोटी (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- ❖ श्रीरामपूर - श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- ❖ बारामती- डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२-२२३८०७ मो.: ९३२५००४९५०
- ❖ अमळनेर, जि. जळगाव - श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- ❖ जळगाव - श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- ❖ धुळे - श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- ❖ शहादा, जि. नंदुरबार - श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- ❖ इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर - श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- ❖ मिरज, जि. सांगली - श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- ❖ कोल्हापूर - सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन. ०२३१-२६९५४३३
- ❖ सातारा व सातारा जिल्हा - श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. - ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४



## अहिंसामूर्ति भगवान महावीर

लेखक : मुनिश्री पुलक सागरजी

अहिंसा, संयम एवं तपोमय आदर्श जीवन के प्रतीक भगवान महावीर को इस संतप्त विश्व में स्मरण कर, उनके जीवनादर्शों के चिन्तन एवं पालन की जितनी आवश्यकता आज उपस्थित हुई है, उतनी संभवतः पहले कभी नहीं रही होगी। इसलिए आज हम पुनः हमारे सुंदर अतीत की इस परम विभूति की गौरव-गाथा गाकर, अपने राष्ट्रीय व्यक्तित्व को टटोलें और पुनः उनके मंगल मार्ग पर चलने का संकल्प करें।

भारत में श्रमण और वैदिक, ये दो परम्पराएँ बहुत प्राचीनकाल में चली आ रही हैं। इनका अस्तित्व ऐतिहासिक काल से आगे प्राग-ऐतिहासिक काल में भी जाता है। भगवान ऋषभ प्राग-ऐतिहासिक काल में हुए थे। वे जैन परम्परा के आदि तीर्थंकर थे और धर्म-परम्परा के भी प्रवर्तक थे। भगवान महावीर चौबीसवें और इस युग के अन्तिम तीर्थंकर के रूप में मान्य है।

भगवान महावीर का जन्म-स्थान, गंगा के दक्षिण में और पटना से २७ मील उत्तर में, आया बसाड़ नाम का गाँव है। वहाँ क्षत्रिय कुंड और कुण्डपुर नाम के दो उपनगर थे। ईसा से ५९९ वर्ष पूर्व, चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के पावन दिन, भगवान महावीर ने पिता सिद्धार्थ एवं माता महारानी त्रिशला के यहाँ जन्म लिया।

तीस वर्ष की यौवनावस्था में, महावीर पूर्ण संयमी बनकर श्रमण बन गये। दीक्षित होते ही उन्हें मनःपर्यव ज्ञान हो गया। दीक्षा के बाद, महावीर प्रभु ने घोर तपस्या एवं साधना की। अनेक महान उपसर्गों को अपूर्व समता भाव से सहन किया। ग्वालों का उपसर्ग,

संगम देव के कष्ट, शूलपाणि यक्ष का परिषह, चण्डकौशिक का डंक, व्यन्तरी के उपसर्ग, भगवान महावीर की समता एवं सहनशीलता के असाधारण उदाहरण हैं।

साढ़े बारह वर्ष की अपूर्व साधना के पश्चात, प्रभु महावीर को केवलज्ञान की उपलब्धि हुई। भगवान महावीर को केवलज्ञान उत्पन्न होते ही, देवगणों ने पंचदिव्यों की वृष्टि की और सुन्दर समवसण की रचना की। भगवान के समवसण में आकाश मार्ग से देव-देवियों के समुदाय आने लगे। प्रमुख पंडित इंद्रभूति को जब मालूम हुआ, कि नगर के बाहर सर्वज्ञ महावीर आये हैं और उन्हीं के समवसण में ये देव गण जा रहें हैं, तो उनके मन में अपने पांडित्य का अहंकार जागृत हो उठा। वे भगवान के अलौकिक ज्ञान की परख करने और उनको शास्त्रार्थ में पराजित करने की भावना से समवसण में आये।

भगवान की शांत मुद्रा एवं तेजस्वी मुख-मण्डल को देखकर तथा उनकी अमृत वाणी का पान करने से इंद्रभूति के सब अन्तरंग संशयों का छेदन हो गया और वे उसी समय अपने शिष्यों सहित भगवान के चरणों में दीक्षित हो गये। इसी प्रकार अन्य दस विद्वान भी अपनी शिष्य मण्डली के साथ उसी दिन दीक्षित हुए। वे ग्यारह प्रमुख शिष्य ही गणधर कहलाये।

भगवान महावीर ने अहिंसा, संयम, तप, पाँच महाव्रत, पाँच समिती, तीन गुप्ति, अनेकान्त, अपरिग्रह एवं आत्मवाद का उपदेश दिया। अवतारवाद की मान्यता का खण्डन करते हुए उत्ररवाद प्रस्तुत किया। यज्ञ के नाम पर होने वाली पशु एवं नरबलि का घोर विरोध किया तथा सभी वर्ग के सभी जाति के लोगों को

धर्मपालन का अधिकार बतलाया । जाति-पांति व लिंग के भेदभाव को मिटाने हेतु उपदेश दिये। चंदनबाला प्रकरण महावीर की स्त्री जाति के प्रति संवेदना का विशेष उदाहरण है ।

महावीर ने ३० वर्षों तक, तीर्थकर के रूप में विचरण कर, जिन धर्म का सदुपदेश दिया । आपका अन्तिम चार्तुमास पावापुरी में हुआ । जब वर्षाकाल का चौथा मास चला रहा था, कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन, भगवान ने रात्रि में चार अघाति कर्मों का क्षय किया और पावापुरी में परिनिर्वाण को प्राप्त हुए । पावापुरी बिहारशरीफ के अनिकट है । यहाँ पर सुन्दर एवं मनोरम जल-मंदिर है । जैन लोग इसे भगवान महावीर की पुण्यभूमि मानते हैं और इस पवित्र तीर्थभूमि का दर्शन कर अपने जीवन को कृतकृत्य समझते हैं । निर्वाण के समय भगवान की आयु ७२ वर्ष थी ।

भगवान महावीर प्रतिशोधात्मक हिंसा, प्रतिकारात्मक हिंसा और आशंकाजनित हिंसा से उपरत थे, अनर्थ हिंसा की तो बात ही कहाँ ? भगवान महावीर अपने साधना काल में प्रायः मौन रहते थे । अधिकांश समय ध्यानस्त रहते और अनाहार की तपस्या करते थे । वे अपने विशिष्ट साधना बल के आधार पर कौशल्य को प्राप्त हुए ।

जन्म के पूर्व गर्भकाल में ही, महावीर ने अहिंसा को आत्मसात् कर लिया था । जैन साहित्य में उनके गर्भकाल का एक रोचक प्रसंग प्राप्त होता है । गर्भस्थ शिशु वर्द्धमान ने एक बार विचार किया कि, जब मैं माँ के उदर में स्पंदन-कंपन करता हूँ, तो इससे मेरी माँ को कष्ट तो होता होगा । क्या ही अच्छा हो, कि मैं स्पन्दन को बंद कर दूँ, ताकि मेरी माँ को कष्ट न हो। शिशु ने वैसा ही किया । शरीर को स्थिर कर लिया । मानो की कायगुप्ति और कार्यात्सर्ग का प्रयोग किया हो । उधर माँ त्रिशला ने अनुभव किया कि, गर्भ का स्पंदन बंद हो

गया । लगाता है गर्भ मृत हो गया है । इस अनुमान ने माँ को शोक सरोवर में निमग्न कर दिया ।

कुछ समय बाद गर्भस्थ शिशु ने विशिष्ट ज्ञान से माँ की स्थिति को देखा तो पता चला कि काम तो उल्टा ही हो गया । किया तो अच्छे के लिए और हो गया कुछ अन्य । उसने पुनः स्पंदन शुरू किया तब माँ को पता चला कि गर्भ सुरक्षित है । वातावरण पुनः हर्षमय बन गया । उस समय गर्भस्थ शिशु ने चिंतन किया कि, मेरे स्पंदन बंद कर देने मात्र से माँ को इतना कष्ट हो सकता है, तो यदि मैं माँ-पिता की विद्यमानता में संन्यास का पथ स्वीकार करूँगा तो उन्हें कितना कष्ट होगा । इसलिए, मैं संकल्प करता हूँ कि अपनी माता-पिता की विद्यमानता में, मैं संन्यास स्वीकार नहीं करूँगा। यह प्रसंग प्रभु महावीर के गर्भकाल में होनेवाली करूणा और मातृ-पितृ भक्ति का सशक्त और विरल उदाहरण है ।

भगवान श्री महावीर का साधनाकाल घोर कष्टमय रहा था । शूलपाणि यक्ष और संगम देव ने एक-एक रात, प्रभु को बीस-बीस मारणान्तिक कष्ट दिये । जिनको पढ़ने और सुनने मात्र से काया कांप उठती है। शास्त्रों के अनुसार, अभिनिष्क्रमण के बाद कई महीनों तक महावीर की देह को जहरिले मच्छर, कीड़े आदि नोचते रहे और उनका रक्त पीते रहे । लाढ देश के अनार्य लोगों ने भगवान को बहुत यातनाएँ दी । मारा, पीटा 'शिकारी कुत्तों को पीछे लगाया । चण्ड कौशिक साँप ने काँटा । ग्वालों ने कानों में किल्लियाँ ठोकी, पावों में आग जलाकर खीर पकाई, फिर भी समता के सुमेरू महावीर अडोल और अकम्प रहे । ध्यानयोग, तपोयोग और अन्तमौन में लीन रहे । उनकी चेतना सदा अस्पर्श योग के शिखर पर प्रतिष्ठित रही । वे आत्केन्द्रित थे ।

महावीर का पूरा साधना काल समता की साधना में बीता उनके सामने अनुकूल दोनों ही प्रकार के परीषह

उत्पन्न हुए । उन्होंने अपनी सहिष्णुता के द्वारा उन परीषहों को निरस्त किया । उनकी समता की साधना थी ।

शोध विद्वानों के मत से महावीर को कोई ऐसा दिव्य ज्ञान प्राप्त था, जिससे, वह अपने प्राण ऊर्जा को चेतना के किसी ऐसे बिन्दु पर केन्द्रित कर लेते थे, जिससे शरीर पर घटित होने वाली किसी भी घटना का उनकी चेतना पर प्रभाव नहीं पड़ता था । वह गुण उनका विलक्षण अस्पर्शयोग ही था ।

महावीर का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त अनेकान्तवाद व स्यादवाद है । महावीर ने कहा है, कि सभी मत और सिद्धान्त पूर्ण सत्य नहीं हैं । सापेक्ष दृष्टि से विचार करने पर सभी दृष्टिकोण सत्य ही प्रतीत होते हैं । इसलिए, अपने-अपने मत या सिद्धान्त पर अड़े रहने से संघर्ष बढ़ता है । आज जो वर्ग-संघर्ष, अशान्ति और शस्त्रों का अन्धानुकरण बढ़ रहा है, उसे रोकने में अनेकान्त की दृष्टि, सहअस्तित्व की भावना महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है । महावीर ने कहा था, कि प्रत्येक इन्सान यदि अपने स्वरूप को पहचान ले, तो भगवान बन जाता है । महावीर का भगवान सृष्टी संचालक ही हैं । महावीर का भगवान भगवत्ता को प्राप्त इन्सान है । महावीर ने स्वयं को पहचानने के तीन सूत्र दिये एकांत, मौन, और ध्यान । महावीर ने तप भी किया था-उपवास का तप । उपवास यानी, आत्मा में वास करना । भोजन छूटना उसका सहज परिणाम था । महावीर के लिए ध्यान और उपवास अलग अलग नहीं थे । ध्यान और उपवास दोनों का ही अर्थ है, आत्म केन्द्रित अवस्था ।

महावीर की साधना हमारे जीवन की प्रयोगभूमि है । हम केवल महावीर के अनुयायी बनकर ना रह जाये । स्वयं के भीतर ध्यान की ज्योति जलाकर महावीर को पुर्नजीवित करें । जो महावीर चले गये, वो लौटकर नहीं

आ सकते । किंतु हमारे भीतर का महावीर जरूर जाग सकता है । महावीर ने कहा था - अप्पणा सच्चमे सेज्जां मेत्ति भूएसु कप्पए, स्वयं सत्य को खोजे एवं सबके साथ मैत्री करें । महावीर ने कहा था, जीओं और जीने दो । इस प्रकार महावीर के पुराने सिद्धान्तों की आजभी उतनी ही आवश्यकता है, जितनी उस समय थी । आवश्यकता सिर्फ उन्हें गहराई से समझकर अपनाने की है । ●

## रत्न संदेश

पूज्य आचार्यदेव श्रीमद्  
विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा

### श्रुतज्ञान

मति, अवधि, मनः पर्यव और  
केवलज्ञान ये चार मूक है,  
जबकि श्रुतज्ञान वाचाल है ।  
श्रुतज्ञान का ही  
आदान-प्रदान हो सकता है,  
अन्य किसी ज्ञान का नहीं ।  
अतः श्रुतज्ञान की प्राप्ति के लिए  
विशेष प्रयत्न होना चाहिए ।

### पागलपन

समय बीतता है और  
बलवान् व्यक्ति भी कमजोर हो जाता है ।  
रूपवान् व्यक्ति भी कुरूप बन जाता है ।  
धनवान् भी निर्धन बन जाता हैं,  
ऐसे विचित्र संसार पर  
क्या विश्वास रखना ?  
संसार में सब कुछ अस्थिर है,  
क्षणिक है और परिवर्तनशील है ।  
ऐसे संसार से मोह रखना, सिर्फ पागलपन  
ही है ।

तीर्थकर प्रभु महावीरांचे अंतिम वचन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्रावर आधारीत

# ॥ जिनेश्वरी ॥

प्रवचनकार : उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.

भावानुवाद : साध्वी श्री ओजसदर्शनाजी म.सा., सौ. योगिता चंगेडे (क्रमशः)

## अध्याय - २४ : अष्ट प्रवचन माता

आपल्या लक्ष्याला प्रभु-प्रतिमा मानून  
त्याचा सत्कार-स्वीकार करा.

त्याचा तिरस्कार करणारे असफल होतात.

भगवंतांची दिव्यवाणी ऐकण्यासाठी मानवच नव्हे  
देवी-देवतासुद्धा येतात. ती धर्मसभा ज्या धर्म सभेत  
बसल्याने आपल्या अनंत पापांचे विसर्जन आणि अनंत  
पुण्याचे सृजन होते. आधि-व्याधी उपाधीचा विलय  
होतो आणि समाधीत आपली चेतना लयबद्ध होऊन  
जाते. त्या धर्मसभेला, त्या भगवंतांना तेथे उपस्थित  
साऱ्या देवी-देवतांना आपल्या हृदयाच्या भूमिवर  
स्थापित करा आणि डोळे बंद करून ती दिव्य अनुभूती  
करा. त्या धर्मसभेत भगवंताची दिव्यवाणी प्रसारीत होत  
आहे.

कशा प्रकारे माता आपल्या लेकराला हात पकडून  
चालायला शिकविते, बोलायला शिकविते, किती परम  
वात्सल्याने घास भरवते. कशा प्रकारे आई आपल्या  
बाळाचा सांभाळ आणि संगोपन दोन्ही करत असते.

### आईची माया शिकवीते जगाया

अट्ट पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य ।

पंचेव य समिईओ, तओ गुत्तीओ आहिया ॥

या अध्यायात आपल्या जीवन चर्येतील छोट्या-  
छोट्या गोष्टींची कशी जपणूक-वागणूक करावी याची  
चर्चा आहे. आपण कोणतीही वस्तू घेतली तरी अशी  
प्रेमाने घ्यावी जसे आई आपल्या बाळाला घेते. कोणतीही

वस्तू ठेवायची असेल तरी अशी ठेवावी जशी आई  
आपल्या लेकराला काळजीपूर्वक ठेवते. कोणतीही वस्तू  
हाताळावी तरी निष्काळजीपणाणे नव्हे तर जिव्हाळ्याने.

जिच्याबरोबर जगणे अवघड ती सासू असू शकते,  
माता नाही. जेव्हा चालतासुद्धा येत नाही तरीपण जीवन  
जगता येते ती केवळ आईच असते. जेव्हा आपल्याला  
बोलतासुद्धा येत नाही तरीपण आपल मनोगत जिला  
कळतं ती आईच असते. अशीच अष्टप्रवचन माता  
आहे. असे चाला की आपणआपल्या आईबरोबर  
चाललो आहोत, असे बोला की जणूमातेशी हितगूज  
करीत आहोत, कोणतीही वस्तू घेणे किंवा ठेवणे असे  
करा जसे माता आपल्या बाळाला पाळण्यात ठेवतआहे,  
जी वस्तू अनावश्यक आहे. ती अशी टाका, अशा  
प्रकारे सोडा जशी आई आपल्या बाळाची शारीरिक  
घाण ममतेनेच साफ करते. मौनसुद्धा व्हायचे असेल तर  
आई जशी वात्सल्यात मौन होते तसे मौन पाळा. चालणं,  
बोलणं, खाणं, आदि प्रत्येक गोष्टीत मंगलता प्रकट  
व्हायला हवी. ही अष्टप्रवचन माता नसेल तर आपण  
बेवारशी, अनाथ बनून जाल म्हणून या मातेची शरण  
ग्रहण करा.

भगवंतांची ही दिव्यवाणी आपल्या जीवनात सत्य  
होवो, त्यांनी दिलेले वरदान आपल्या दुःखमुक्ततेचे  
कारण बनावे. त्यांच्यापासून प्राप्त झालेले ज्ञान आम्हांस  
सिद्धी प्रदान करेल, पुरुषार्थाचा प्रकाश देईल. आम्ही  
त्या दिव्य प्रकाशात टाकलेले प्रत्येक पाऊल तीर्थयात्रा  
बनेल, बोललेला प्रत्येक शब्द मंत्र बनेल. जे ग्रहण

करू तेही, मंगल, जे सोडून देऊ ते सुद्धा मंगलमयच होईल. विचार मंगलकारी, मौन ही मंगलकारी, शरीरातील प्रत्येक रोमारोमांतून मंगल ध्वनी प्रवाहित होईल म्हणून अशा अष्टप्रवचन मातेची शरण घेऊया..... गुणगान करूया.

या अध्ययात ५ समिती ३ गुप्तींना अष्टप्रवचन संबोधिले आहे. १८ प्रकारच्या पापात जाणाऱ्या मन, वचन, कायेला, प्रतिबंध करणे ही गुप्ती आहे. तर बोलणे, ठेवणे आदि ५ प्रकारच्या क्रियेत सम्यक प्रवृत्ती बाळगणे या समिती आहेत, पहिली समिती आहे इर्या समिती-चालावे कसे ?

**इर्या समिती - कसे चालावे ?**

चालावे लागते पण चालतांना एक सूत्र लक्षात ठेवावे की आपले चालणे यात्रा बनावी जत्रा नव्हे. आपले पाऊल मुक्कामांपर्यंत आपल्याला पोहचविणारे असावे भटकवणारे नसावे. असे चालू नये की पाय घासले जातील, असे चालावे की ज्याच्यासाठी चाललो आहोत ते मिळावे. जो खऱ्या पद्धतीने चालतो तो ध्येयापर्यंत पोहोच किंवा न पोहोचो पण लक्ष-ध्येय त्याच्यापर्यंत पोहचल्याशिवाय राहणार नाही, असे चरण जेव्हा चालायला लागतात तेव्हा ते राजमार्गच बनवून टाकतात. अशी पाऊले हवी असतील, तर अट एकच आहे की जेव्हा पण चालण्यासाठी प्रवृत्त व्हाल ज्ञानाचे आलंबन घ्यावे. अज्ञानात पाऊल उचलू नये. मी कशासाठी पाऊल उचलत आहे याचा बोध असावा. त्याचे भान असायला हवे.

मनात कोणत्याही प्रकारचा संशय ठेवून, विकल्प ठेवून पाऊल उचलू नये. संशयपूर्ण मनाने जे चालतात ते आपत्ती विपत्तीलाच प्राप्त होतात. संशय संकटाजवळ घेऊन जातो, श्रद्धा सिद्धी जवळ घेऊन जाते आणि म्हणूनच जेव्हा पण आपण आपली पावले आपले पाय उचलाल तेव्हा आपण कुठे जात आहोत हे महत्वाचे नाही, दुकान अथवा घर, हॉटेल की थिएटर, कोर्टात

चाललो की मंदिरात चाललो, महत्वाचे आहे आपले भाव. आपल्या भावनेत संशय नसेल व विश्वास असेल तर आपण जेथेपण जाल ती जागा-ती वास्तू मंदिरच होऊन जाते. अशी श्रद्धा संपन्न विचार करणारी व्यक्ति जेथे जाईल यशच प्राप्त करील त्याच्या जीवनात अपयश येऊ शकत नाही आणि अशा प्रकारच्या सफलतेपूर्ण जीवनाचे छोटेसे सूत्र भगवंतांनी प्रदान केले आहे की चालण्यापूर्वी ज्ञानाचे आलंबन घ्यावे. श्रद्धापूर्ण पाऊल असावे, चालतांना दृष्टी मार्गावर असावी मार्गावरून नजर हलवू नये. जेव्हा मार्गावरून दृष्टी विचलित होते तेव्हा मार्गातील सर्व विघ्ने दूर करण्याची शक्ती समाप्त होऊन जाते. ज्यांनी आपली नजर मार्गावरून विचलित केली त्यांनी विघ्नांना जिवंत केले समजावे, संकटांना येण्याचा मार्ग मोकळा केला. ज्यांची नजर निरंतर आपल्या मार्गावर असते त्यांच्या मार्गात कोणतेही विघ्न येऊ शकत नाही.

**तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे**

शिखरप्राप्तीचे सूत्र भगवंतांनी दिले आहे 'तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे' ज्या गोष्टींसाठी चालले आहात ती प्रतिमा आहे, मूर्ती आहे, ध्येय आहे, साध्य आहे. दृष्टी मार्गावर आणि चित्त लक्ष्य प्राप्तीवर असावे. माझे एक-एक पाऊल मला माझ्या मुक्कामा पर्यंत पोहचवित आहे. भगवंतांनी शब्द दिला आहे 'तम्मुत्ती'-ही मूर्ति आणि 'तप्पुरक्कारे' - त्या मूर्तीचा मला सत्कार-स्वीकार करावयाचा आहे तिरस्कार कदापि करू नये. आपण आपल्या लक्ष्याचा तिरस्कार करतो म्हणून आपण सफल होत नाही. आपण सफल होऊ की नाही ? आपण तेथे पोहचू की नाही असा संशय ज्यांच्या मनात निर्माण होतो ते आपल्या ध्येयाचा तिरस्कार करतात. आपले लक्ष्य विसरून जातात, ते असफल होतात. जसे आई कुठेही असो तिचे सर्व लक्ष्य आपल्या बाळाकडे असते, त्याप्रमाणे इर्यासमिती ही माता ज्यांच्याजवळ असते ते लक्ष्य भ्रष्ट-पथ भ्रष्ट होऊ शकत नाही.



## भाषा समिती - कसे बोलावे ?

अशा प्रकारची आपली भाषा असायला हवी की आपले वचन मंत्रस्वरूप बनून जावे. वचनाला अमंत्र बनण्याची कारणं आहेत.

१) क्रोधात बोलणे २) आक्रोशयुक्त वचन ३) अहंकाराने बोलले जाणारे शब्द ४) मायायुक्त वचन ५) लोभासक्त वाणी ६) भयभीत होऊन बोलणे ७) चेष्टा-कुतूहलाने बोललेले शब्द ८) कपटयुक्त वचन  
अशी भाषा, असे वचन सत्याला सुद्धा सैतान बनवून टाकतात. सत्यसुद्धा भयंकर वाटते जेव्हा ते क्रोधाने बोलले जाते. सत्यपण नरकात घेऊन जाते. जेव्हा ते अहंकारयुक्त असते. सत्यसुद्धा जीवनात गुंता निर्माण करते जेव्हा ते लोभाने आप्लावित असते. सत्यसुद्धा बेड्या ठोकून देते जेव्हा ते कपटाने भरलेले असते. सत्य म्हणजे देवता आहे. परमात्मा आहे.

सत्याला कलंकित करणारी चार कारणे क्रोध, मान, माया, लोभ, सत्याला विचलित करणारी चार कारणे हास्य, भय, तणावग्रस्त वाणी, चिंताग्रस्त होऊन बोललेले वचन सत्य या दिव्य शक्तिपर्यंत आपणास पोहचू देत नाही. जे भयभीत असतात त्यांच्याजवळ भूतच येऊ शकतात भविष्य येऊ शकत नाही.

प्रश्न व्याकरण सूत्रात भगवंतांनी सांगितले आहे की भयग्रस्ताला भूत ग्रासित करतात, तिथे भविष्य येऊ शकत नाही, तिथे सृजन होऊ शकत नाही. म्हणून भगवंत सांगतात आपल्या ध्येयाशी निगडीत जे असेल तेच बोलावे, त्या व्यतिरिक्त बोलू नये. कारण आपले लक्ष्य सोडून बोलणे म्हणजे विकथा करणे होय. अशी विकथा आपल्या लक्ष्याला, आपल्या ध्येयाला रूग्ण करून टाकते, अशा प्रकारे बोलले तर आपण लक्ष्यभ्रष्ट होऊन जातो. आपण धर्म करीत आहात पण आक्रोशपूर्ण करीत आहात तर ती विकथा होते.

जेव्हा अंतरंगात विकृती नसेल तेव्हाच बोला. अशा पवित्र मनाने जेव्हा बोलाल तेव्हा तुमचे शब्दच

मंत्र बनून जातील. 'असावज्जं मियं कालें' - अशी वेळ पहा की बोलतांना अंधार नसेल अर्थात अंधार कधी होतो? श्वास बाहेर जातो तेव्हा. जेव्हा श्वास आत घेतो तेव्हा प्रकाश-उजेड असतो. श्वास आत घेणे जीवन आहे. श्वास बाहेर जाणे मृत्यु आहे. जीवन प्रकाश आहे. मृत्यु अंधार आहे.

लक्षात घ्या बंधूनों ! जितके हळू बोलाल तेवढे अहिंसक आहात. जितके जोरात बोलाल तेवढी हिंसकवृत्ती निर्माण होईल. अहिंसा पूर्ण शब्द आल्हाददायी असतात. कोणाच्या कानावर आपले शब्द पडले तर त्याला वाटावयास हवे की सुमन-फुलं पडली आहेत. शब्द दगड किंवा काट्यासारखे भासतात. जेव्हा कुणी जोरात बोलतात. म्हणूनच भगवंतांनी खूपच गोड सूत्र प्रदान केले की आवाजात ताण आणू नका, गळ्यातसुद्धा ताण येऊ देऊ नका, असे केले तर मग नात्यात-संबंधात ताण-तणाव येण्यास सुरवातच होत नाही व नात्यात गोडवा टिकून राहतो.

## एषणा समिती - कसे ग्रहण करायचे ?

आता विधी पाहूया कसे ग्रहण करायचे ?

भोजन कसे घ्यायचे ? पैसे कसे मिळवायचे ? घर कसं घ्यायचं ? कपडे कसे प्राप्त करायचे ? प्रतिष्ठा कशी कमवायची ? यश कीर्ति कशी मिळवायची ? सगळ्या प्रश्नांचे उत्तर या श्लोकात आहे. तीन गोष्टींचे मार्गदर्शन आहार, उपाधी आणि शय्या.

विना-शोध-बोध घेता खाणे म्हणजे निव्वळ चरणे आहे, ते ग्रहण करणे नाही, जे शोध-बोध घेऊन खातात ते शरीरच नाही तर जीवनासाठी पाथेयच प्राप्त करतात. वस्तु घेताना-वापरताना पहा आधी वस्तू कोठून आली ? तिचा मूळ उद्गमस्त्रोत्र कुठे आहे ? तिची निर्मिती कशी झाली ? एवढंच जरी बघितलं तरी फार काही दिसून येईल.

उदा. कोकाकोलाच घेऊ-जेव्हा कोकाकोलाची एक बाटली आपण पितो तेव्हा आपल्या देशातील

किती धनराशी विदेशी तिजोरीत पडते. म्हणूनच पहा ती आली कोठून ?

दुसरी गोष्ट जेव्हा पण आपण काहीही ग्रहण करता, श्रद्धेने-अहोभावाने ग्रहण करा, देणाऱ्याच्यासाठी आदराचा भाव ठेवा, निश्चित त्यावेळी तुम्हाला आनंदाची अनुभूती होईल.

आपण रोज घरी जेवतो, पण कधी हॉटेलमध्ये जेवल्यानंतर वेटरला टिप देतो की नाही ? मग विचार करा घरी ज्या गृहीणी तुमच्यासाठी भोजन तयार करतात वाढतात त्यांना टिप तर सोडा थोडं स्मित तरी देता का ? कौतुकाचे दोन शब्द तरी बोलता का ? मंदिरात स्थानकात रोज येता. येथे साफ-सफाई करणाऱ्यांना, ध्वनीप्रक्षेपणाचे कार्य करणाऱ्यांना काही बक्षीस देता का ?

दुसरी गोष्ट भोजन करतांना मनात तिरस्काराची भावना, क्रोधाची भावना नको. नाहीतर त्या अन्नाचा आनंदाचा रस तयार होण्याऐवजी 'धूर' होतो. 'रसा' ऐवजी राखच बनते.

भोजनाची स्तुती करू नका. भोजन बनविणाऱ्याची स्तुती करा. भोजनाची स्तुती भोजनाला 'निखारा' बनवते तर भोजनाची निंदा भोजनाला 'धूर' बनविते. निखाराही बनवू नका व धूरही बनवू नका. प्रभूचे नामस्मरण करीत भक्ती भावाने प्रसादरूप मानून ग्रहण करा. अन्न ग्रहण करा. अन्न ग्रहण करतांना मनामध्ये अहो भाव हवा, अहंकारपूर्णभाव नको. जे खाणार आहात प्रसाद म्हणून ग्रहण कराल तर देवत्व तुमच्यात उतरल्या शिवाय राहणार नाही.

#### आदान-निक्षेप (ग्रहण-स्थापना समिती)

वस्तू घेताना व ठेवताना तिला प्रथम चक्षुने, डोळ्याने पहा. घेताना किंवा ठेवताना नजर एकीकडे व ठेवता दुसरीकडे असं कधीच करू नका. चप्पल काढून ठेवत आहात, कपडे ठेवत आहात किंवा इतर काहीही असो ठेवण्याआधी त्या जागेचे प्रमार्जन करा, सफाई करा, जीवजंतू असतील तर हळूवारपणे त्यांना बाजूला करा व मग काळजीपूर्वक ठेवा तर ठेवणे सार्थक होईल

पापाची उत्पत्ती होणार नाही.

#### विसर्जन-उत्सर्जन समिती

टाकण्याची, सोडण्याची किंवा विसर्जनाची संयमित प्रवृत्ती म्हणजे उच्चार समिती म्हणजेच विसर्जन-उत्सर्जन समिती. कचरा, टाकतांना शरीरातील घाण मल, मूत्र, मळ शेंबूड आदी टाकताना, विसर्जित करताना असे करा की त्यांच्याबरोबरील संबंधही विसर्जित होतील. जिथे शरीर आहे, परिवार आहे, समाज आहे तिथे अशुद्धी तर होणारच. पण त्या अशुद्धिला असे विसर्जित करावे त्या अशुद्धिबरोबरच नाते संपावे. त्यासाठी एक सूत्र भगवंत देतात की आधी अशुद्धि प्रयत्नपूर्वक विसर्जित करावी व नंतर 'ओसिरामी...' असे तीन वेळा म्हणावे म्हणजेच माझा त्या वस्तूवरील त्या घाणी बरोबरच संबंध संपवित आहे.

विनामालकीच्या जागेवर आपण काही टाकत असू तर शकेन्द्र देवाची आज्ञा घेऊन टाकावी म्हणजे त्या जागेकडून प्रतिक्रियेची संभावना थांबते. कुठेही बसायचे असेल तर आज्ञा घेऊनच बसावे आज्ञा न घेता बसाल तर आक्रमण होऊ शकते व आक्रमणाच्या उत्तरात प्रत्याक्रमणही होऊ शकते. आज्ञा घेऊन बसलात तर अनुरोध होईल. उपलब्धी होईल व त्रास सहन करावा लागणार नाही.

आज जगात दोन मोठ्या समस्या आहे. १) पाण्याची २) कचरा कसा आवरावा-निपटावा ? देशात ही समस्या दिवसेंदिवस वाढत चालली आहे. प्रभू महावीरांनी २६०० वर्षापूर्वीच जीवन स्वस्थ आणि सुरक्षित ठेवण्यासाठी सांगितले आहे कि कचऱ्याचे नियोजन कसे करावे ? सूका कचरा कुठे टाकावा-ओला कचरा कुठे ? कचरा बनूच नये याची विधी भगवंतांनी सांगितली.

आपणच गटारीत प्लास्टिक टाकतो आणि तेच प्लास्टिक एक गंभीर समस्या बनले आहे. आपण घरात भाजी निवडतो, भाजीची देठे, साल वगैरे प्लास्टिक पिशवीत टाकून कचऱ्याच्या डब्यात ठेवतो, त्यापेक्षा

जेथे गाय-बकरी वगैरे पशू असतील तेथे जाऊनच टाकलं तर ? प्लास्टिक सहित फेकतो मग गाय तसंच खाऊन घेते आणि मृत्यूला प्राप्त होते. निष्पाप जीव आपल्या निष्काळजीपणामुळे जिवाला मुकतात.

घरात कचरा कसा काढावा-कसा टाकावा व कुठे टाकावा ? हे शिकलं पाहिजे. अनावश्यक साठवून-सांभाळून भंगार गोळा करून, आटाळ गोळा करून ठेवता, फ्रीजमध्येसुद्धा जमा करता. परंतु ताजं असेल तेव्हाच देऊन टाकत नाही. शिळं झाल्यावर, खराब झाल्यावर देण्याची इच्छा तरी कशी होते ? फ्रीजमध्ये राहून तुमची मनही फ्रीज सारखी थिजून गेली आहे का ? ऊर्जामय वात्सल्याने भिजलेली राहिली नाहीत. मन थंड झालं, हृदय ही गार झालं.

### मन-वचन-काया गुप्ती

भगवंतांनी पाच समिती बरोबर ३ गुप्तींचेही विवेचन केले आहे. हे विवेचन अगदी गहन आहे. ३ शब्द आहे. संरंभ, समारंभ आणि आरंभ काम करण्याची इच्छा झाली संरंभ. ते काम करण्याची तयारी झाली म्हणजे समारंभ आणि काम केलं ते 'आरंभ', मनानं, विचार केला "यांचं चांगलं व्हायला पाहिजे" मनातच विचार करीत गेलो याला मनगुप्ती म्हणतात. बोललो 'याचं चांगलं व्हायला पाहिजे आणि चांगले झाले त्याला म्हणतात 'वचन गुप्ति' कोणाच्या पाठीवर हात फिरवला आणि सांगितलं "जा तुझं मंगल होईल, कल्याण होईल." अन त्यांच काम झाल ती आहे कायगुप्ति.

लक्षात ठेवा तोंडाने कधी अशुभ शब्द बोलायचे नाहीत, ना स्वतःसाठी, ना दुसऱ्यांसाठी, ना परिस्थितीसाठी, ना देशासाठी. अनुकूल परिस्थिती असो-प्रतिकूल परिस्थिती असो आपल्या मुखाद्वारे अशुभ शब्द काढू नये. जेव्हा अशुभ शब्दाची ही उदिरणा ज्या दिवशी बंद होऊन जाईल, तेव्हा अशुभाची शक्ति आतून शुभमध्ये परिवर्तित होऊन जाईल आणि जेव्हा

आपली ऊर्जा शुभामध्ये परिवर्तित होते तेव्हा ते निरवद्य होईल. तो निरंतन-निराकार होईल. जिव्हेला कधी घाण होऊ देऊ नका. जर वाणी पवित्र ठेवली तर आपण बोललेले शब्द मंत्र बनून जातात. याला म्हणतात अ कुशलाचा निरोध, कुशलाचे निर्माण. पापाचा निरोध व पुण्याचं जागरण ही वचनगुप्ति आहे.

अशीच कायेची पवित्रता जपा. मनात पाप येऊ देऊ नका. ज्याक्षणी पाप येण्यास सुरूवात होते लगेच पुण्याचे चिंतन सुरू करा. दुःखाचे क्षण आठवल्याबरोबर सुखाचे क्षण आठवावे. कलहाची आठवण आल्याबरोबर क्रिडेची आठवण करा. यालाच म्हणतात मन, वचन आणि कायागुप्ति.

अंतगंड सूत्राची आराधना जेव्हा करता तेव्हा मी सांगत असतो की लोक अर्जुनमाळीला शिव्याशाप देत होते पण त्यावेळी अर्जुनमाळी शिव्याशाप ऐकत नव्हता. तो एकच वाक्य घोक्त होता की मला भगवंतांनी सांगितलं आहे की "तू प्रभू आहेस" बस एकच घोक्त राहिला 'मी प्रभू आहे.' त्याने एकदाही लोकांच्या बोलण्यावर विश्वास केला नाही. जनवाणीला सत्य नाही मानले जिनवाणीलाच सत्य मानले आणि म्हणूनच तो जिंकला. तुम्हीही त्याच मार्गावर चाला ही मंगलकामना आहे. तुम्ही तीर्थ बना, व्यर्थ अनर्थ नका बनू. जीवनाला सार्थ-तीर्थ बनवा. (क्रमशः) ●



## कच्छर तपशील - एप्रिल २०१८

### ❖ भगवान महावीर जन्म कल्याणक

२४ वे तीर्थंकर श्री भगवान महावीर स्वामी यांचा २६१७ वा जन्मकल्याणक चैत्र शुद्ध त्रयोदशी २९ मार्च २०१८ रोजी सर्वत्र उत्साहात साजरा करण्यात आला.

### ❖ पंन्यास प्रवर श्री हंसरत्नविजयजी म.सा.

प.पू. तपस्वी पंन्यास प्रवर श्री हंसरत्नविजयजी म.सा. यांची ५४ वी मासक्षमणची तपश्चर्या सुरु आहे. नुकतेच गुरुदेवांचे पुण्यात पदार्पण झाले. गत १७ वर्षात त्यांनी ५४ मासक्षमणची तपश्चर्या केली आहे. गतवर्षी कोल्हापूर येथे चातुर्मासात त्यांनी १२३ उपवास केले होते.

### ❖ सौ. अलकाबेन गुजर, पुणे - दीक्षा

ऋतुराज सोसायटी, पुणे व तळेगाव ढमढेरे येथील श्री. उदयभाई कांतीलालजी गुजर यांच्या पत्नी सौ. अलकाबेन या २५ एप्रिल रोजी शंत्रुजय तीर्थ, पुणे येथे दीक्षा घेत आहेत. ऋतुराज मित्र मंडळ परिवारातर्फे दीक्षार्थी सौ. अलकाबेन व दीक्षेला परवानगी देणारे श्री. उदयभाई व गुजर परिवाराचा सन्मान कार्यक्रम २५ मार्च रोजी स्वयंवर मंगल कार्यालयात ठेवला होता. यावेळी श्री. उदयभाई यांना मानपत्र देण्यात आले. ऋतुराज मित्र मंडळ महिला सभासदांनी सौ. अलकाबेन यांचा सन्मान केला.

### ❖ कुमार डायलिसिस सेंटर, पुणे

कुमार प्रॉपर्टीज व केसरीमल हिमतमल चॅरिटेबल ट्रस्ट द्वारा भवानी पेठ, पुणे येथे कुमार डायलिसिस सेंटर गत ५ वर्षांपासून आपली सेवा देत आहेत. येथे अत्यंत माफक दरात रु. २००/- मध्ये डायलिसिस केले जाते. सकाळी ७.३० ते रात्री १२.३० या काळात डायलिसिस सेंटर चालविले

जाते. कुमार प्रॉपर्टीजच्या सौ. लविना हितेशजी जैन या डायलिसिस सेंटरचे कार्य पहातात. तसेच येथे इंद्रकुमार जैन मेमोरियल आय केअर सेंटर मार्फत डोळ्यांची मोफत तपासणी व औषधोपचार मोफत केले जातात.

❖ श्री. राजेंद्रजी सुराणा, पुणे - ६५ वी समारोह  
जैन धर्म व समाजाचे जागृत अभिमानी, सामाजिक कार्यकर्ते श्री. राजेंद्रजी सुराणा यांनी वयाची ६५ वर्षे पूर्ण केली. या निमित्त त्यांचे नातेवाईक व मित्र परिवारातर्फे १७ मार्च रोजी समारोहाचे आयोजन केले. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी श्री. विजयकांतजी कोठारी, प्रमुख अतिथी म्हणून डॉ. पी.ए. इनामदार, श्री. विठ्ठलजी मणियार, श्री. मिलिंदजी फडे उपस्थित होते. या मान्यवरांच्या हस्ते श्री. सुराणाजी यांचा सन्मान करण्यात आला. यावेळी श्री. सुराणा यांच्या लेखनाचे संकलन करून त्यांच्या कार्याची माहिती देणारी पुस्तिका सौ. रश्मी श्रीश्रीमाळ यांनी तयार केली. या पुस्तिकेचे प्रकाशन यावेळी करण्यात आले.

### ❖ श्री. गिरिशजी पारख - सन्मान

लोणावळा येथील श्री. गिरिशजी धनराजजी पारख (नवरत्न चिक्की) यांचा साप्ताहिक अंबरच्या वर्धापन दिनानिमित्त डॉ. बालाजी तांबे व इतर मान्यवरांच्या हस्ते कर्तव्य भूषण पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले.

### ❖ डॉ. अशोक बोरा - सन्मान

चिंचवड, पुणे येथील डॉ. अशोक चंपालालजी बोरा यांचा अभिष्टचिंतन महोत्सवात १८ मार्च रोजी राठोड परिवारातर्फे विशेष सत्कार करण्यात आला. डॉ. बोरा हे सर्व साधु-संत व आर्थिक दृष्ट्या दुर्बल पेशंटना मोफत औषधोपचार करतात. त्यांच्या या कार्याबद्दल त्यांचा सन्मान करण्यात आला.

- ❖ “निखिल गुरोसरी वर्ल्ड” – आळंदी  
आळंदी देवाची, जि. पुणे येथे श्री. सतिशजी कांतीलालजी चोरडिया व चोरडिया परिवारातर्फे “निखिल गुरोसरी वर्ल्ड” या भव्य सुपर शॉपीचे उद्घाटन नुकतेच करण्यात आले. कांतीलालजी नंदरामजी चोरडिया, सौ. आनंदीबाई कां. चोरडिया व श्रीमती चंचलाबाई कांतीलालजी बंब यांच्या हस्ते भव्य सुपर शॉपी (मॉलचे) उद्घाटन करण्यात आले.
- ❖ संचेती ट्रस्ट, पुणे – पाणपोई  
स्व. इंदुमती बन्सीलाल संचेती या ट्रस्टच्या वतीने मार्केट यार्डात पाणपोईची सुरुवात करण्यात आली. या पाणपोईच्या उद्घाटना साठी सहाय्यक पोलीस आयुक्त डॉ. शिवाजीराव पवार, मार्केट कमिटीचे सभापती दिलीप खैरे, ट्रस्टचे अध्यक्ष श्री. अभयजी संचेती, अॅड अभय छाजेड, पोलीस निरीक्षक मोहन शिंदे, सुभाष ललवाणी, पोपटलाल ओस्तवाल, पन्नालाल संचेती, विजय शिंगवी, राजू काग, मनिष संचेती, सतीश श्रीश्रीमाळ, हरकचंद देसरडा, कांतीलाल श्रीश्रीमाळ, सुरेश वानगोता, सचिन देसरडा, सुर्यकांत झेंडे, विकास सावंत, धरमचंद छाजेड यांच्यासह अनेक मान्यवर मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.
- ❖ राज मसाले, पुणे – वार्षिक मेळावा  
राज मसाले पुणे तर्फे दरवर्षी वार्षिक मेळाव्याचे आयोजन केले जाते. या वर्षी वार्षिक मेळाव्याला आमदार सौ. मेघाताई कुलकर्णी, श्री. लक्ष्मीकांत खाबिया इ. प्रमुख पाहुणे उपस्थित होते. यावेळी मसाल्या विक्रीत उल्लेखनीय कामगिरी केल्याबद्दल व्यापाऱ्यांना पारितोषिके देण्यात आली. यावेळी सौ. मेघाताई कुलकर्णी यांचा सन्मान करताना राज मसाल्याचे व्यवस्थापकीय संचालक श्री. महेंद्रकुमारजी खाबिया व श्री. प्रितमजी खाबिया.

**गुरु आनंद तीर्थ – चिचोंडी**  
**‘अक्षय तृतीया’**  
**वर्षीतप पारणा महोत्सव**  
**बुधवार, दि. १८ अप्रैल २०१८**  
**\* संपर्क \***  
**गुरु आनंद फाँडेशन**  
**मोबाईल :**  
**९३७१०००४०६, ९८२२०१११९९**

**महाराष्ट्रातील जास्तीत जास्त जैन**  
**समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वात खात्रीशीर,**  
**सर्वात सोपा व सर्वात स्वस्त मार्ग...**  
**जैन जागृति**